कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 10, (मार्च, 2024)
पृष्ठ संख्या 35–36

भू–नाडेप

डॉ. रिंकेश सिटोले
सहायक परियोजना प्रबंधक (कृषि),
अर्पण सेवा संस्थान, सीहोर, भारत।

Email Id: rinkeshsitole88@gmail.com

परिचय

यह जैविक खाद तैयार करने की एक ऐसी प्रक्रिया है। जिसके माध्यम से कम से कम लागत लगाकर के जैविक खाद तैयार कर सकते है। जो रासायनिक की अपेक्षा अत्यधिक लाभप्रद होता है। जिसके माध्यम से किसान अपने व्यय को कम कर अपनी आय को बड़ा सकता है।

सामग्रीः

1. गोबर – मृदा के जैविक आरंभ में इसकी उपस्थिति एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती अगर हम बात करें ऐसी मृदा जिसमें जैविक पदार्थ उपस्थित होता है उसकी उर्वरता उत्पादकता तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता सबसे अधिक होगी यहां तक की ऐसी मिट्टी में होने वाली फसलों का उत्पादन सर्वश्रेष्ठ होता है जिसका कारण इसमें उपस्थित कार्बन की मात्रा हमस तथा जैविक सूक्ष्मजीवों द्वारा उपस्थित तैयार खाद से है स

2. पॉलिथीन – पॉलिथीन एक ऐसी वस्तु है जो कि कभी भी जीवन पर्यंत सड़ती नहीं है यहां तक कि वह किसी भी जीव के पेट में जाने पर उसे क्यों मृत्यु पर्यंत ही बाहर निकलते इसलिए है यहां पर हम भू नाटक में पॉलिथीन का प्रयोग करेंगे जिसमें गोबर डालकर मटके की सहायता से इसका वर्ग में वास प्राप्त कर के टॉनिक के रूप में फसलों पर प्रयोग करेंगे जो की विभिन्न प्रकार के रूप प्रतिरोधक क्षमता एवं उत्पादन उत्पादकता आदि को बढ़ाने में मददगार होगा।

3. किल – यह कच्चे भुनाते के गड्ढे में पॉलिथीन को ठिकाने के लिए या यह कह सकते हैं कि पॉलीथिन दीवार के सहारे व्यवस्थित रहे उसके लिए प्रयोग की जाती है जो की एक गड्ढा जो तीन बाय 6 का है उसमें 8 से 10 किलो की जरूरत होती है यह पानी को खड़ा रखने के साथ–साथ फेरस सल्फेट की भी मात्र की पूर्ति करता है जो की सूक्ष्म पोषक तत्व के रूप में फसलों में कमी को प्रदर्शित करता है इसके बाद अलग से किस को फेरस सल्फेट या लोहे की मात्रा को देने की जरूरत नहीं पड़ती।

4. वर्मी वास के लिए पात्र – यह कच्चे धनत के बगल में एक गड्ढा जो कि 1.5 से 2 फीट गहरा होगा उसमें कोई भी प्लास्टिक या मिट्टी का पत्र रख दें जो वर्मी गड्ढे से पानी रिकर आएगा उसको इकट्ठा करने के लिए जिसे वार्निवास या व में निखार कहेंगे इसकी खासियत यह है कि इस पर डाले गए केंचुए से की स्किन से रगड़ कर पानी आता है जिसमें ऑक्सीजन हारमोंस की अधिकता होती है जो पौधों की वृद्धि आदि को बढ़ाने में सहायक होता है।

बनाने कि विधिः

गेती फावड़े की सहायता से आवश्यकता अनुसार जमीन में गड्ढा खोदे जिसका आकार 12 X 4 X 2.5 हो। 2 से 4 दिन अच्छी तरह धूप लगने दे। तत्पश्चात पन्नी को सही से गड्ढे में बिछाये। इसके पश्चात 15 – 20 दिन पुराने गोबर को गड्ढे में डालें। यहाँ पर मुख्य उद्देश्य मिथेन गैस को निकालना है। ध्यान रहे पन्नी को लगाने के लिए गड्ढे की खड़ी दीवार पर लगाये, जिसमें 8 से 10 किल का प्रयोग करें। जिससे कि पन्नी को सही से दीवार के सहारे टिका सके। यहां पर किल लगाने का उद्देश्य सूक्ष्म तत्व फेरस सल्फेट (लोह तत्व) की पूर्ति करना है। गोबर ठंडा होने के पश्चात उसमें 1 किलो केचुआ डालें।

यह खाद 80 से 90 दिन में बनकर तैयार हो जाएगी या पहली परत 25 से 30 दिन में बनेगी। इसमें गोबर डालने के पश्चात पानी की मात्रा को सुव्यवस्थित और निश्चित रूप से समय–समय पर आवश्यकता अनुसार देना

अत्यधिक लाभप्रद होता है जैसे अगर हम बात करें बेड को तट के कपड़े से गिला करके ढक दिया जाए एवं उसे पर सुबह–शाम एक–एक बाल्टी छिड़काव करके पानी देना कि एक साथ डाला जाए एक साथ डालने की अवस्था में केंचुए की बेड में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ जाएगी जिससे कि बेड में उपस्थित केंचुआ जो किसान का मित्र कहलाता है सुचारू रूप से शोषण क्रिया करने में असमर्थ रहेगी एवं केंचुए की मृत्यु हो जाएगी जो खाद बनाने में व्यवधान उत्पन्न होगा।

प्रयोग विधीः

तैयार खाद को खड़ी फसल में पौधे की जड़ क्षेत्र में या बिखर कर या खाली खेत में पहले जुताई के समय दे इससे फायदा यह होगा कि अगर हम पौधे की जड़ क्षेत्र में दे रहे तो कम से कम खाद में अधिक से अधिक एरिया कम कर कर सकते हैं जैसे कपास सब्जी वर्गी फसल बैगन भिंडी मिर्ची आदि फसलों में हम टॉप ड्रेसिंग के द्वारा दे सकते हैं यहीं पर अगर सोयाबीन गेहूं, मुंग, उड़द, चना अधिक अगर हम बात करें तो यहां पर हम खेत में बिखर कर या ब्रॉडकास्टिंग मेथड के द्वारा इसको फेंक सकते हैं अगर हम बात करें की जुताई के पहले तो गर्मी में बारिश के पूर्व में पहले जुताई के समय खेत में डालें तत्पश्चात बारिश में पूरी खाद जड़ संरक्षण कर उसके पूरे पोषक तत्व मिट्टी के द्वारा पौधों को प्राप्त होकर के उत्पादन उर्वरता तथा उत्पादकता में सहायक होंगे तथा कहीं ना कहीं रासायनिक के प्रयोग को भी काम कर सकते हैं।

लाभः

1. तरल पोषक की प्राप्ति
2. मार्केट से रासायनिक ना लाना पड़े
3. रासायनिक दवाइयो के प्रयोग में कमी
4. वातावरण, स्वास्थ्य, आदि में सुधार
5. मृदा उर्वरता एवं उत्पादकता में बढ़ोतरी
6. मानव स्वास्थ्य में सुधार
7. मृदा उर्वरता एवं उत्पादकता में सुधार
8. मृदा उर्वरता एवं उत्पादकता में बढ़ोतरी
9. मृदा स्वास्थ्य में सुधार
10. किसान की आर्थिक स्थिति में सुधार एवं बचत आदि के अधिक स्त्रोत

सावधानियां

1. केंचुआ डालने के पश्चात उसमें समय पर पानी का छिड़काव करते रहे।
2. चींटी आदि लगने पर बोरे को गिला करके गद्दे को ढकदे।
3. बेसन और गुड़ को आधा किलो लेकर 2 लीटर पानी में घोले तथा पूरे बेड में तरल रूप में फैला कर डाल दें ।
4. अधिक धूप की अवस्था में बेड के ऊपर छाया करें।
5. खाद 20 से 25 दिन में पहली परत बनकर तैयार हो जाती हेस जिसको सावधानी पूर्वक हाथ से इकट्ठा करें स फावड़े या किसी लोहे के पात्र का प्रयोग ना करे ।
6. खाद को मोटे चलने की सहायता छान कर केंचुआ अलग करें स एक भू–नाड़ेप से लगभग 4 से 5 कुंटल खाद तैयार होगी।

भू–नाड़ेप गड्ढा

गड्ढे मे पॉलिथीन रखी

गड्ढे मे गोबर डाला

गड्ढे मे केचुआ डाला